संख्या-40/2018/3022/22-2-2017-17(764)/2017

प्रेषक,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर,

संयुक्त सचिव,

उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

महानिरीक्षक,

कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,

उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 ***लखनऊ: दिनांक 16 जनवरी, 2018***

विषय:- केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी प्राग सिंह पुत्र श्री बच्चन लाल निवासी जनपद-एटा की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक अपने पत्र संख्या-39903/प्रोबेशन-3/फार्म-ए(एम-02.05.2017) दिनांक 16.11.2017 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- आपके उक्त पत्र द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी प्राग सिंह पुत्र श्री बच्चन लाल, जो ग्राम-हैदलपुर, थाना-रिजोर, जनपद-एटा का रहने वाला है। बन्दी के लडके ने आग लगा कर आत्महत्या कर ली बन्दी को शक था कि भगवान सिंह ने जादू-टोना कर उसके लडके को मार दिया है, इसी रंजिश में भगवान सिंह एवं उसके लडके राजेन्द्र को मारने की कोशिश में था, दिनांक 26/27.07.2001 की रात्रि अपने 04 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर भगवान सिंह के घर पर हमला किया जिसमें चाकू एवं तमंचे से रघुवीर सिंह एवं लल्लू सिंह नामक 02 व्यक्तियों की गोली मारकर हत्या की। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-730/2001 में भा0द0वि0 की धारा- 147, 148, 302/149 के अन्तर्गत मा0 अपर सत्र न्यायाधीश (एफ0टी0सी0 सं0-1), एटा के आदेश दिनांक 10.12.2002 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया। बन्दी द्वारा दिनांक 03.03.2017 तक 15 वर्ष 06 माह 20 दिन की अपरिहार सजा तथा 20 वर्ष 03 माह 17 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है लेकिन प्रोबेशन बोर्ड की आख्या में यह उल्लेख करते हुए कि बन्दी ने लडके द्वारा की गयी आत्महत्या के शक में भगवान सिंह एवं उसके लडके राजेन्द्र को मारने की नियत से दिनांक 26/27.07.2001 की रात्रि को अपने 04 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर भगवान सिंह के घर पर हमला किया, जिसमें चाकू एवं तमंचे से रघुवीर सिंह एवं लल्लू सिंह नामक 02 व्यक्तियों की गोली मारकर हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी द्वारा पीडित पक्ष को प्रभावित करने, पुन: अपराध करने में अशक्त न होने, इसकी पुष्टि जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in

अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा 05 बिन्दुओं की आख्या में की गयी है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता, जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी प्राग सिंह पुत्र श्री बच्चन लाल को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

3- अतः उपरोक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी प्राग सिंह (बन्दी संख्या-16593) पुत्र श्री बच्चन लाल निवासी जनपद-एटा के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति शासन द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतद्द्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नकः यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

संख्या-40/2018/3022(1)/22-2-2017 तद्दिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः-

1- जिला मजिस्ट्रेट, एटा।

2- वरिष्ठ अधीक्षक, केन्द्रीय कारागार, आगरा।

3- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री, कारागार विभाग को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।

4- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अतः इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in

शासनादेश सख्या-40/2018/3022/22-2-2017-17(764)/2017

दिनांक 16 जनवरी, 2018 का संलग्नक

<u>सरकार के आदेश</u>

केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी प्राग सिंह पुत्र श्री बच्चन लाल, जो ग्राम-हैदलपुर, थाना-रिजोर, जनपद-एटा का रहने वाला है। बन्दी के लडके ने आग लगा कर आत्महत्या कर ली बन्दी को शक था कि भगवान सिंह ने जादू-टोना कर उसके लडके को मार दिया है, इसी रंजिश में भगवान सिंह एवं उसके लडके राजेन्द्र को मारने की कोशिश में था, दिनांक 26/27.07.2001 की रात्रि अपने 04 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर भगवान सिंह के घर पर हमला किया जिसमें चाकू एवं तमंचे से रघुवीर सिंह एवं लल्लू सिंह नामक 02 व्यक्तियों की गोली मारकर हत्या की। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-730/2001 में भा0द0वि0 की धारा- 147, 148, 302/149 के अन्तर्गत मा0 अपर सत्र न्यायाधीश (एफ0टी0सी0 सं0-1), एटा के आदेश दिनांक 10.12.2002 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया। बन्दी द्वारा दिनांक 03.03.2017 तक 15 वर्ष 06 माह 20 दिन की अपरिहार सजा तथा 20 वर्ष 03 माह 17 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है लेकिन प्रोबेशन बोर्ड की आख्या में यह उल्लेख करते हुए कि बन्दी ने लडके द्वारा की गयी आत्महत्या के शक में भगवान सिंह एवं उसके लडके राजेन्द्र को मारने की नियत से दिनांक 26/27.07.2001 की रात्रि को अपने 04 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर भगवान सिंह के घर पर हमला किया, जिसमें चाकू एवं तमंचे से रघुवीर सिंह एवं लल्लू सिंह नामक 02 व्यक्तियों की गोली मारकर हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी द्वारा पीडित पक्ष को प्रभावित करने पुन: अपराध करने में अशक्त न होने, इसकी पुष्टि जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा 05 बिन्दुओं की आख्या में की गयी है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता, जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी प्राग सिंह पुत्र श्री बच्चन लाल को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है। उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त शासन द्वारा बन्दी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई अस्वीकार किये जाने का निर्णय लिया गया है।

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in